श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीयं वर्ष - अभ्यास - ३

अगस्त 2024

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द कियां जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. विज्ञान के सिध्दान्त प्रयोगो पर आधारित है, जब कि जैन धर्म के सिद्धांत.....भगवंतो के कहे हुए हैं ।
२. ढाई द्वीप में रहे हुए संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव के मनोभावों को जिस ज्ञान के द्वारा जाना जाता है उसे..... कहते हैं ।
३. अग्निभूति के मन में..... की शंका बहुत प्रबल रुप से घर कर गयी थी ।
४. स्त्री द्वारा कही गई व्यक्तिगत बात अन्य से कहना..... नामक अतिचार है ।
५. धर्मवंत प्राणियों का जागना और पापी प्राणियों को सोना..... होता है ।
६. मति वगैरह चार ज्ञान..... भाव के हैं ।
७. द्रव्य स्नान श्रावक को..... के लिये ही करना चाहिये ।
८. लगातार घटता जाय वह हियमान और अचानक नष्ट हो जाये चला जाये वह..... है ।
९. सत्य सदा सर्वदा एवं सर्वत्र..... होता है ।
१०. दर्शनावरणीय कर्म..... के समान है ।
११. आकाश, वायु, अग्नि तत्व में निद्रा विच्छेद होती है तो ..... जानना ।
१२. परिधि को व्यास के पाव (१/४) भाग से गुणने से वर्तुलाकार वस्तु का..... मिलता है ।
१३. गाय आदि चतुष्पद के बारे में झूठ बोलना..... के अन्तर्गत आता है ।
१४. द्वेष याने क्रोध, मान, इर्ष्या विषाद से उत्पन्न होता है, वह ..... कहलाता है ।
१५. भाग गिरानेवाली संख्या..... कहलाती है ।
१६. द्रव्यस्थान करने के बाद भावस्नान का लक्ष चूक गये तो ..... नहीं पा सकते ।
१७. अदत्तादान विरमण व्रत का दूसरा अतिचार..... है ।
१८. सूर्योदय के समय स्वप्न देखा हो तो ..... फल देता है ।
१९. विभंगज्ञान मिथ्यात्वि को होता है, इससे वह..... है ।
२०. जो मेरे अधिकार या हक का नहीं उसके उपर मेरी सत्ता जमाऊंगा वो ..... है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. दुर्गति का दूत कौन है ?
२. श्रुतज्ञान के सूक्ष्मातिसूक्ष्म अविभाज्य अंश को क्या कहते है ?
३. जंबुद्वीप किसके जैसा गोल है ?
४. रति अरतिरुप अंधकार से रहिंत कौन से भगवान हैं ?
५. दांत की पीठिका किस अंगुली से घसनी चाहिये ?
६. असत्य किसके खजाने के समान है ?
७. जिसका आश्रय लेकर कर्मरुपी मैल धोया जाय उसे क्या कहते हैं ?
८. बारहवां अंग कौनसा है ?
९. नयी वस्तु दिखाकर पुरानी वस्तु दी हो तो कौनसा अतिचार लगता है ?
१०. दातून कितना मोटा होना चाहिये ?
११. अग्निभूति की निर्वाण भूमि कौनसी है ?
१२. शृंखला से बंधे दीपक के समान कौन सा अवधिज्ञान है ?
१३. तत्व की विचारणा करने के लिये किये गये विभाग को क्या कहते है ?
१४. अशुभ स्वप्न आये तो क्या करना चाहिये ?
१५. शांतिनाथ भगवान किसके भंडार रुप हैं ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. निद्दा २) कोसतिग ३) दिसउ ४) जाइ ५) पडिवाई ६) उस्सास ७) निचिअं ८) पज्जय ९) महिअं १०) वित्ति ११) भुविज
१२. सेया १३) अज्जव १४) भयणीये १५) मम १६) विमग्गह १७) अभिग्गहा १८) रिउमइ १९) ज्ञातवृक्ष्यं २०) भुयग

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) परिधि	१) भवप्रत्ययिक अवधिज्ञान	६) नारक	६) दृष्टिवाद
२) मृषावाद	२) राजा-रंक	७) पूर्व	७) परिरय
३) असाधारण	३) वस्तु	८) असत्य	८) अविश्वास
४) कारणीक दोष	४) छः	९) मागधिक	९) केवलज्ञान
५) कर्म	५) ऐप्रिलफूल	१०) चूलिका	१०) अनर्थ दंड

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. श्री अग्निभूति ने कितने दिन की संलेखना की ?
२. अेक गाउ के धनुष्य कितने ?
३. इस अभ्यास क्रम में ज्ञान के कुल कितने भेदों का वर्णन है ?
४. मार्गणा के उत्तरभेद कितने हैं ?
५. इस अभ्यास क्रम मे अजित शांति प्रभु का महिमा बतलाती गाथा कितनी है ?
६. आचारांग सूत्र का मान कितने पद का है ?
७. दातून कितनी अंगुल लंबाई वाला होना चाहिये ?
८. श्री अग्निभूति का दीक्षा पर्याय कितने साल का था ?
९. कुल प्राभृत कितने है ?
१०. जंबुद्वीप की परिधि के योजन कितने है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. निर्दोष कन्या को सदोष कहना वह कन्यालीक है ।
२. दातून उत्तर या पूर्व दिशा के सामने स्थिर आसन से करना चाहिये ।
३. अग्निभूति १४ (चौदह) अंग के जानकार थे ।
४. वस्त्र मापने के गज, मीटर गलत रखे तो मृषावाद विरमण व्रत का भंग होता है ।
५. नासिका में से निकलता वायु ऊँचा चढे तो अग्नि तत्व जानना ।
६. गोल वस्तु की चौडाई उसका क्षेत्रफल कहलाता है ।
७. अदत्तादान सात व्यसन में से एक है ।
८. अजित नाथ भगवान सरलता, क्षमा, निर्लोभता और समाधि के भंडार है ।
९. इन्द्रभूति अग्निभूति से चार साल बडे थे ।
१०. अशाश्वत पदार्थ सतत परिवर्तनशील है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. ज्ञात पेड और अच्छी भूमि में उत्पन्न होना चाहिये ।
२. शाश्वत पदार्थो में कभी भी फर्क संभवित नहीं है ।
३. अनेको को ठगने के द्वारा माया कपट से अपनी आत्मा को ही ठगकर दुर्गति की तरफ ले जाता है ।
४. हे शांति मुनि ! भगवान मुझे शांति तथा समाधि का वरदान दो ।
५. यह जीवन भी हमारी भवभ्रमणा को घटाने के बदले बढानेवाला ही साबित होगा ।
६. खुद के पाप और दोषों का भान होने पर उन्हें त्यागने का प्रयत्न करता है ।
७. स्वर्ग की इच्छावाले को अग्निहोत्र करना चाहिये ।
८. जल द्वारा क्षणभर के लिये देहदेश की शुद्धि का कारण है से द्रव्यस्नान कहा जाता है ।
९. वर्गमूल स्वयं से गुणा हुआ रहता है ।
१०. केवलज्ञान को शास्त्र में शुद्ध, सकल, असाधारण, अनंत, निर्व्याघात और एक ही कहने में आया है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. पाँच प्रकार के असत्य समझाओ । २) अग्निभूति की शंका और प्रभु का समाधान संक्षिप्त में समझाओ ।
३. श्री अजितनाथ भगवान के अलग अलग विशेषण समझाओ ४) अनुगामी, हियमान और अप्रतिपाती अवधिज्ञान समझाओ ।
५. भावस्नान क्या है ? उसके फायदे बताईये ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com